उत्तर प्रदेश के औरंगाबाद और निज़ामाबाद की मृण्मयी कला का

कलात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग, आगरा से
चित्रकला विषय में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु
शोध-प्रबंध की प्रस्तुत-रूपरेखा

शोध निर्देशक
डॉ0 विजय कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
ड्रॉइंग एण्ड पेंटिग विभाग,
कला संकाय

शोध छात्रा
ईशा आचार्य

ड्रॉइंग एण्ड पेंटिग विभाग, कला-संकाय

दयालबाग ऐजूकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग आगरा- 282005

2022

विषय-प्रवेश

शोध संकल्पना	1-2
सम्बन्धित साहित्य का पुर्नावलोकन	2-3
परिकल्पना	3
उद्देश्य	3
चर	4
कार्य प्रणाली	4
अनुसंधान अभिकल्प	4
प्रदत्त संकलन	4
प्राथमिक स्रोत	5
द्वितीयक स्रोत	5
प्रतिदर्श आकार	5
सीमाएँ	5
निष्कर्ष	5
आधुनिक युग में प्रासंगिकता	5

शोध संकल्पना

मृण्मयी कला का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। प्रायः इसके ऐतिहासिक काल के पूर्व तक के उद्ग्म और संस्कृतियों की पुष्टि उत्खनन से प्राप्त मृद्भाण्ड़ों से सिद्ध की जा सकती है, परन्तु इस कथन को स्पष्ट करना भी महत्वपूर्ण है कि सम्भवत जो मृण्मयी कला की छलक हमारी आज की संस्कृति एवं कला जगत में कला की आपूर्ति का साधन बन गई उसका उद्भव किस प्रकार सम्भव हो पाया होगा परंतु इसके महत्वता और पुरातत्व की वर्णमाला से परिचित होना परम आवश्यक है। सर्वप्रथम मृण्मयी कला का आरम्भ हमें सिंधु सभ्यता व उसके समकालीन सभ्यताओं से प्राप्त होते है। उस समय मनुष्य अपने दैनिक जीवन में सुविधाओं की खोज में व्यस्त होते हुऐ अपने जीवन को सरल बनाने का प्रयास करता गया और पहिये की खोज के उपरांत उसने उसी पहिये को चाक का रूप देते हुऐ मिट्टी के बर्तन बनाने प्रारम्भ किये एवं प्रकृति से प्राप्त खनिजों से रंग बनाकर उनमे काली रेखाओं के द्वारा आकृतियाँ को बनाना शुरू किया। जिस प्रकार हम हर विषय की वर्णमाला को समझना परम आवश्यक समझते है, उसी तरह विभिन्न कालों एवं कौशल तकनीक से निर्मत मृण्मयी कला का अध्ययन व परीक्षण करना अति आवश्यक है। इसके द्वारा हम काल विशेष और स्थल विशेष की परम्परा के विविध पक्षों को उद्द्याटित कर सकते है। मृण्मयी कला का इतिहास अत्यंत पौराणिक सिद्ध होता है, प्राय समस्त विश्व के ताम्रपाषाणिक अथवा प्राचीन काल के पूर्व कला संस्कृतियों में मृण्-कला की अनुभूति हमें उत्खन्न से प्राप्त मृद्भाण्डों के आधार पर ही ज्ञात होते है। 1957-58 ई. उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अनुसंधान के रूप में कई अनेक स्थानों पर उत्खनन कार्य किए गए। मृण्मयी कला के अनेक नैदानिक लक्षण जैसे भीमबेटका, कैमूर, पंचमणी, मिर्जापुर में सोनाघाटी की गुफाओं मे प्राचीन पाषाण कालीन मनुष्यों के रहने के अवशेष प्राप्त होते है, जहाँ उनके द्वारा उन गुफाओं में बनाऐं गय चित्र जैसे मिट्टी के पात्र जीवन व्यापन में उपयुक्त होने वाली अधिकांश सामग्रियों में तथ्य निर्विवाद स्पष्ट होता है। हमारे परिवेश मे आज चारों तरफ मिट्टी की बनी वस्तुऐं देखने को मिलती हैं, परन्तु आज के युग में मृण्मयी कला की उपयोगिता और इसकी विशेषता की महत्वता को जाने बिना मनुष्य इसकी उपयोगिता के अभाव के कारण समाज में उत्पन्न हो रहे दुष्परिणामों से ग्रसित होता

जा रहा है। विश्वभर की तुलना में भारतवर्ष में भी मृण्मयी कला को एक परम उपयोगी स्रोत के रूप में स्वीकार किया है। पुरातात्विक उत्खनन के पश्चात विविध प्रकार के पार्थिव मृण्मय कला से हम अवगत हुऐं है।

टेराकोटा शब्द इतालवी शब्द **'बेक्ड अर्थ'** से उत्पन्न हुआ है, अर्थात मिट्टी को पकाकर दैनिक जीवन में उपयोग में लाऐ जाने वाली वस्तुऐं जैसे धार्मिक मृण मूर्तियाँ, दिवाली के तेल के लैंप, भित्ती चित्र और सजावटी हैंगिंग बैल्स सभी टेराकोटा के प्राचीन कला रूप के प्रतिबिंब हैं। इसी प्रकार नित नए फलक को स्पर्श कर रही उत्तर प्रदेश के ही गोरखपुर शहर में स्थित भटहट ब्लॉक के अंदर आने वाले एक बहुत ही छोटे से गाँव औरंगाबाद की (रेड पॉटरी) अपने आकार-प्रकार और विस्मयकारी अलंकरण चित्रण व अद्भुत निर्माण विधि के कारण जन-जागरण में प्रख्यात हो रही है, वही दूसरी ओर ही राज्य उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के कस्बे निज़ामाबाद की विश्व प्रसिद्ध (ब्लैक पॉटरी) अपने काली अद्वितीय चमकदार पकी मिट्टी व उत्कीर्ण चाँदी के पैटर्न के लिये सम्पूर्ण संसार में नई पहचान लिये हुए है। इनकी तकनीकी विशेषता कुछ इस भाती अपने आप में पृथक हैं की इन्हे इजिप्शियन तकनीक से संबोधित किया जाता है परंतु इन्हे किसी विशेष संस्कृति से संलग्न नही किया जा सकता है। विशिष्ट विद्वानों का विचार है कि इन्हे अथर्ववेद में नील-लोहित कहा गया है। इन दोनो मृद्भाण्ड कलाओं का मृण्मयी कलात्मक अध्ययन सम्पूर्ण रूप से इनकी विषयवस्तु ,तकनीकी व शैलीगत विशेषताओं पर निर्भर करता है, इन मृद्भाण्डों का भट्ठी के अन्दर पकानें का तरीका व भट्ठी के भीतर का तापमान स्थापित करने का ढंग एक दूसरे से भिन्नता रखता है। निज़ामाबाद के मृण्-पात्रों को भट्ठी में डालने के पश्चात यह ध्यान रखा जाता है कि भट्ठी चारों और से इस प्रकार बन्द रहे जिससे धुआँ बाहर न निकले और ऑक्सीजन अंदर न प्रवेश कर पाऐं यह कारण है की मृद्भाण्ड ऑक्सीजन के अभाव से काले रंग में परिवर्तित हो जाते है। इन पत्रों को चमकदार रूप प्रदान करना इसकी एक विशेष प्रकार की निर्माण पक्रिया पर आधारित है जिसमे पत्रों के ऊपर एक लेप लगाना है जिसे काबिस कहते है ,काबिस से पात्र की सतह चमकदार होती है। यहाँ उल्लेख करना नितांत आवश्यक है की लगभग 6 शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर 2 शताब्दी ईसा पूर्व में इस प्रकार के लेप का वर्णन मिलता है। निज़ामाबाद पॉटरी के इन्ले वर्क कॉपर और मरकरी के रासायनिक अभिक्रिया का प्रतिफल

है जो की चाँदी जैसा प्रभाव छोड़ता है। लाल मृद्‌भाण्डों का लाल रंग मृण-पात्रों पर मृत्तिका से ही निर्मित घोल लगाने और उन्हे भट्ठी में उच्च स्तरीय तापमान पर बहुत देर तक पकाने से प्राप्त होता है। इन्ही मुख्य कारणों से मृद्‌भाण्ड अपना रूप काले व लाल रंग मे बदल लेते है। भारत में टेराकोटा से बने मंदिरो की संख्या कम ही ज्ञात है पर कानपुर के समीप स्थित 'भीतर गाँव का मंदिर' टेराकोटा का बहुत ही दिव्य उदाहरण है। टेराकोटा से बनाई गई वस्तुओं का हम अपने जीवन में धार्मिक अथवा व्यक्तिगत उपयोग में शुरूआत से ही लेते आऐ है, पर आज हमारे समाज का कुछ अंश ही इसकी उपयोगिता को समझकर इसका उपयोग कर रहा है। मृण्मयी कला प्रर्यावरण के अनुकूल एवं प्रदूषण रहित अपनी कला को उजागर करने में बिल्कुल सक्षम है। टेराकोटा का प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय में भी इसकी गुणवक्ता, उपयोगिता और प्रदूषण रहित विशेषता हेतु मेरे लिए यह जिज्ञासा का विषय बना और इस शोध के द्‌वारा मैंने इसके गुणों को समाज के समक्ष रखने के लिए विषय के रूप में चुना।

सम्बन्धित साहित्य का पुर्नावलोकन- किसी भी शोध को पूर्ण रूप देने से पूर्व यह परम आवश्यक होता है कि शोधकर्ता शोध से सम्बन्धित जानकारियों का अध्ययन करे और यह स्पष्ट रूप से सम्भवतः अपने शोध के विषय को स्मरण में रखते हुए उससे सम्बन्धित साहित्य के पुर्नावलोकन से ही सम्भव है। पुर्नावलोकन अपने शोध के विषयों में पर्याप्त जानकारियों की पूर्ती कर उसमें विश्वसनीयता को स्थापित करने में निसंदेह सहायक सिद्‌व होता है। वैसे मेरे शोध के विषय से सबंधित पुस्तकों की संख्या कम ही उपलब्ध है। मैंने अपने शोध को तर्कपूर्ण तथा अथपूर्ण रूप प्रदान करने हेतु लेखक **कृष्ण चंद्र श्रीवास्तव** द्‌वारा लिखत पुस्तक **प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति** का चयन किया। यह पुस्तक प्राचीन प्रमुख मृद्‌भाण्ड परम्परायें और मेरे विषय के संदर्भ में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दू मेरे समक्ष रखने में सहायक रही। प्राच्य विद्‌या संस्थान से प्रकाशित लेखक **डॉ ० जयनारायण पाण्डेय** की पुस्तक **पुरातत्व विमर्श** भी प्रायः समस्त मृद्‌भाण्डों के ऐतिहासिक काल के पूर्व तक की जानकारीयों को पूर्ण रूप से स्पष्ट करने में प्रबल रही । मैंने लेखक **सुशील कुमार पाण्डेय** की पुस्तक **प्राचीन मृण्मयी मूर्तिकला** का भी अध्ययन किया। जिसके द्‌वारा मुझे मृण्मयी मूर्तिकला का भी गहन अध्ययन प्राप्त

हुआ। इसके अतिरिक्त मैने इन्टरनेट के स्रोतों का भी अवलोकन किया। इन सभी स्रोतों ने मेरे शोध विषय को प्रभावी बनाने और विभिन्न तथ्यों की जानकारी प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्राप्त जानकारीयों के आधार पर मैं अपने शोध को कलात्मक रूप प्रदान कर उसमे उत्कृष्ट गहन अध्ययन पूर्ण रूप से करने का प्रयास करूँगी।

परिकल्पना- एक शोधकर्ता के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि वह अपने लेख शोध की रचना करने से पूर्व उस विषय के बारे में चिन्तन करे। शोध आरम्भ करने से पहले अपनी परिकल्पना को स्पष्ट व अर्थपूर्ण रूप देना अनिवार्य है क्योंकि उसी के आधार पर अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाया जा सकता है। प्राचीन मिट्टी कला इतिहास की पुस्तकों को पढ़ने के बाद प्राप्त जानकारीयों ने मुझे इसे अपना शोध का विषय बनाने के लिये अपनी ओर आकृषित किया। सम्बंधित विषय सार्वभौमिक व विश्वसनीय हो और परीक्षण योग्य हो इसकी कल्पना के बाद अध्ययन किया जो तर्कयुक्त व सत्यभासी प्रतीत हुआ। मृण्मयी कला हमारी प्राचीन संस्कृति का ही प्रतिबिंब है जो विषय को सकारात्मक दिशा प्रदान करता है। मैं अपने शोध के माध्यम से समाज के समक्ष इसके अनन्त गुणों व इसकी उपयोगिता की विशेषता को लाने का प्रयास करूँगी।

उद्देश्य- किसी भी शोधकर्ता के लिए शोध को उत्तम और पूर्ण रूप प्रदान करने के लिए यह अति आवश्यक है की वह विषय के अनुकूल उद्देश्यों को निश्चित करे। इसके द्वारा ही वह अपने शोध का एक विनीत रूप से प्रारूप प्रस्तुत कर सकता है। मेरे शोध विषय'**उत्तर प्रदेश के औरंगाबाद और निज़ामाबाद की मृण्मयी कला का कलात्मक अध्ययन**'के सन्दर्भ में मेरे निम्नलिखित उद्देश्य रहेंगे-

1- मृण्मयी कला की ऐतिहासिक स्थिति को प्रस्तुत करना।

2-औरंगाबाद और निज़ामाबाद के शिल्प कला के कलात्मक पहलुओं का अध्ययन करना।

3- मृण्मयी कला की गुणवक्ता जैसे तथ्यों को पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य करना।

4- अज्ञात समाज को इस विषय की उपयोगिता की विशेषता के बारे में जानकारी प्रदान करना।

5- मृण्मयी कला को आधुनिक जीवन शैली में स्थापित करना।

6- सामाजिक पृष्ठभूमि में मृण्मयी कला की प्रतिबद्धता स्थापित करना और वर्तमान परिदृश्य के लिए मृण्मयी कला को प्रायोगिक बनाना।

7- आधुनिक समाज को वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से मृण्मयी कला को जोड़ना।

चर-

कला शिक्षक

औरंगाबाद और निज़ामाबाद क्षेत्र की मृण्मयी कला का सर्वेक्षण

पुस्तके,पत्र-पत्रिकाओं में संदर्भित लेख

विवरणिका (कैटलॉग)

इण्टरनेट वेबसाइटस

छाया चित्र

स्थानीय कलाकारों से साक्षात्कार

विषय-विशषज्ञों से विषय पर वार्तालाप

कार्य प्रणाली-

अनुसंधान अभिकल्प- इस शोध कार्य का अध्ययन **'मृण्मयी कला**'से सम्बन्धित प्रयोगात्मक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान है।

प्रदत्त संकलन-

प्रदत्त के एकत्रीकरण का स्वरूप प्राथमिक व द्वितीय स्त्रोत पर आधारित रहेगा।

प्राथमिक स्त्रोत- वर्तमान में शोध विषय से सम्बन्धित मृणमय कला से कार्यरत कलाकारों का साक्षात्कार व छाया चित्रों के संकलन का निरीक्षण करना।

द्वितीय स्त्रोत- औरंगाबाद और निज़ामाबाद क्षेत्र का भ्रमण,पुस्तके-लेख ,पत्र-पत्रिकाओं , समाचार पत्र , इण्टरनेट वेबसाइट।

मेरे सम्मानित निर्देशक के साथ विषय पर वार्तालाप।

प्रतिदर्श आकार- मेरे शोध कार्य हेतु 150-200 प्रतिदर्शों का चयन किया जाऐगा।

सीमाएँ- किसी भी शोध विषय की अपनी कुछ सीमाएँ निर्धारित होती है। साथ ही शोध के पूर्ण होने की भी एक अपनी निश्चित समय अवधि होती है। समय व शोध विषय के चयन प्रक्रिया को ध्यान में रखकर मैंने अपने शोध कार्य को उत्तर प्रदेश के औरंगाबाद और निज़ामाबाद की मृण्मयी कला के कलात्मक अध्ययन को ही स्थान दिया है।

निष्कर्ष- औरंगाबाद और निज़ामाबाद की मृण्मयी कला ने अपनी कलात्मकता के कारण विश्व में एक अपना पृथक स्थान बनाया हुआ है,और कला के क्षेत्र में अपने बाजारीकरण को भी समानान्तर बनाये रखा है।

आधुनिक युग में प्रासंगिकता- शुरूआत से ही भारत की कलाएँ अपनी सांस्कृतिक और परम्परागत प्रभावशीलता को अभिव्यक्त करने का माध्यम रहे हैं। मृण्मयी कला भी उन परम्परागत कलाओं में से एक है, जिससे आज के आधुनिक युग में भी उसके अत्यंत सौंदर्य, भाव और प्रामाणिकता के कारण उसकी प्रासंगिकता इतनी प्रबल है। टेराकोटा एक प्राचीन कला रूप है, और सचेत मानव मन की रचनात्मकता की अभिव्यक्ति। मृण्मयी कला पृथ्वी से आत्मा तक की वह कला है, जो भारतीय विरासत व संस्कृति का एक अतुल्य हिस्सा होने के कारण आज भी संसार भर में फल-फूल रही है। वर्तमान में भारत के हर प्रदेश में मृण्मयी कला अपनी एक विशेष शैली और पद्धति लिये हुएँ है, जिसके कारण इसकी ख्याति पूरी दुनिया भर में फैली हुई है। मृण्मयी कला शिल्प कौशल पर मनुष्य के पहले प्रयास का प्रतीक है। औरंगाबाद की मृण्मयी कला की संरचना इतनी अद्भुत प्रतीत होती है की मिट्टी के उतपादों को बनाने के लिऐ कलाकार किसी भी रंग का प्रयोग न करके सिर्फ सोडा और आम के पेड़ की छाल के मिश्रण में उसे डुबोकर उसमें रंग भरता है जोकि वर्षो तक फीका नही पड़ता है और यूँ ही अक्षत हमारे घरों की शोभा भड़ाता है। निज़ामाबाद की मृण्मयी कला की कलाकृतियाँ मिट्टी का वह अनूठा प्रकार है, जो अपने गहरे चमकदार पदार्थ और उत्कीर्ण चांदी के पैटर्न के लिये वर्तमान में विश्वविख्यात विरासत के सत्त अनुस्मारक के रूप में अपनी सुदृढ़ पहचान प्राप्त किये हुएँ है।

विषय-सूची

भूमिका- भारतीय मृण्मयी कला का इतिहास

प्रथम अध्याय- उत्तर प्रदेश के औरंगाबाद और निज़ामाबाद का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय

द्वितीय अध्याय- औरंगाबाद और निज़ामाबाद की मृद्भाण्ड कला का उद्भव एवं विकास

तृतीय अध्याय- औरंगाबाद और निज़ामाबाद की काली मृद्भाण्ड और लाल मृद्भाण्ड कलाओं का कलात्मक अध्ययन

3.1 आकृति, आकार व रंग के आधार पर

3.2 आलेखन के आधार पर

3.3 मृण्मय कलाकृतियों के आधार पर

चतुर्थ अध्याय- औरंगाबाद व निज़ामाबाद की मृण्मय कलाओं का तकनीकी एवं शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन

4.1 मृदा के आधार पर

4.2 निर्माण प्रक्रिया के आधार पर

4.3 विषयवस्तु के आधार पर

पंचम् अध्याय- औरंगाबाद व निज़ामाबाद की मृण्मय कलाओं का सौंदर्यात्मक विश्लेषण

5.1 भारतीय षडंग के आधार पर

5.2 कला के तत्वों के आधार पर

5.3 संयोजन के आधार पर

षष्टम् अध्याय- औरंगाबाद व निज़ामाबाद की मृण्मय कलाओं का आधुनिक समय में महत्व और उसका बाजारीकरण

उपसंहार

परिशिष्ट-

संदर्भ -ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ सूची

Bibliography

इंटरनेट वेबसाइट्स

पत्र-पत्रिकाऐं

कलाकारों से साक्षात्कार

संग्रहालय/पुस्तकालय/कला वीथिकाऐं

मानचित्र

चित्र सूची

शोध सम्बन्धित चित्र-फलक

अनुसंधान अभिकल्प-

भूमिका- इसके अंर्तगत भारतीय मृण्मयी कला के इहिास का अध्ययन किया जाएगा।

प्रथम अध्याय- इस अध्याय के अंर्तगत मैं उत्तर प्रदेश के औरंगाबाद और निज़ामाबाद का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिचय विस्तार पूर्वक प्रस्तुत करूँगी।

द्वितीय अध्याय- के अंर्तगत औरंगाबाद और निज़ामाबाद की मृद्भाण्ड कला का उद्भव एवं विकास का विस्तार पूर्वक अघ्ययन किया जाएगा।

तृतीय अध्याय- इस अध्याय को तीन भागों में विभाजित कर औरंगाबाद और निज़ामाबाद की काली मृद्भाण्ड और लाल मृद्भाण्ड कलाओं का कलात्मक अध्ययन किया जाएगा।

चर्तुथ अध्याय- इस अध्याय के अंर्तगत औरंगाबाद व निज़ामाबाद की मृण्मयी कलाओं का तकनीकी एवं शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन किया।

पंचम् अध्याय- इस अध्याय के अंर्तगत औरंगाबाद व निज़ामाबाद की मृण्मयी कला का सौंदर्यात्मक विशलेषण किया जाएगा। यह अध्याय तीन भागों में विभाजित किया जाएगा तथा भारतीय षडंग के आधार पर, कला के तत्वों के आधार पर व संयोजन के आधार पर उनके सौंदर्यात्मक पहलुओं का वर्णन किया जाएगा।

षष्टम् अध्याय- यह अध्याय शोध विषय का महत्वपूर्ण व अंतिम अध्याय है। इस अध्याय में औरंगाबाद और निज़ामाबाद की मृण्मयी कला का बाजारीकरण और वर्तमान समय में इसकी महत्वता पर प्रकाश डाला जाएगा।

उपसंहार- औरंगाबाद और निज़ामाबाद के मृण्मयी कला का सौन्दर्यात्मक दृष्टि से समकालीन कला में योगदान व प्रासंगिकता को प्रस्तुत करना।

दिनांक-

शोध छात्रा

ईशा आचार्य

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

श्रीवास्तव, चन्द्र कृष्ण, (1991)"प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति यूनाइटेड बुक डिपो, इलाहाबाद।

पदमा भूषण,ईश्वरी प्रसाद, (1980) "प्राचीन भारतीय सस्ंकृति, कला, राजनीति"धर्म तथा दर्शन, इलाहबाद।

पाण्डे, जयनारायण, (1983) "पुरातत्व विमर्श" प्राच्य विघा संस्थान, इलाहाबाद।

पाण्डे, सुशील कुमार, 'प्राचीन मृण्मयी मूर्तिकला' वाराणसी।

अग्रवाल, वासुदेवशरण, (1966)"भारतीय कला" पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी।

सिंघानिया, नितिन, (2015) "भारतीय कला एवं संस्कृति", मैक ग्रो हिल शिक्षा, चेन्नई।

सेनगुप्ता, अरपुथारानी, (2005) "आर्ट ऑफ टेराकोटा" अगम कला प्रकाशन, नई दिल्ली।

काला, एस. सी, (2003) "टेराकोटा इन द इलाहबाद म्यूजियम" अभिनव प्रकाशन ,नई दल्ली।

पाल, प्रतापदित्य, (2003) "इंडियन टेराकोटा स्कल्प्चर" द मार्ग फाउंडेशन, मुंबई।

Bibliography

•Abraham, T.M.- (1964), 'Handicrafts in India' New Delhi.

•Mishra, Umesh Chandra - (1984), 'Tribal Paintings and Sculptures' P.K Publication.

•Agrawal, V.S- (1965), 'Indian Art' Prithivi Prakashan, Varanasi.

•Swaminathan, J. - (1987), 'Preceiving Fingures' All India HandiCrafts Board, New Delhi.

•Kala, S.C - (1993),'Terracottas of North India' Agam kala Prakashan, New Delhi.

•Jain, Jyotindra - (1999), India Book House.

•Clark, Sharri . R -(2017), 'The Social Lives of Figurines' Harvard University Press.

•Dhamija, jasleen -(1994), 'India Folk Art and Craft' National Book trust.

•Huyler,StephenP-(1999), "Gifts of Earth" 'Teracottas and Clay sculptures of India'Grantha Corporation.

Internet Websites

www.dollsofindia.com

https://en.m.wikipedia.org

https://www.swadeshi.com

https://indiathedestiny.com

www.visual-arts-cork.com

www.hindustantimes.com

www.indiamart.com

www.ipindiaservices.gov.in

www.jagran.com

www.outlookindia.com

परिशिष्ट- चित्रसूची

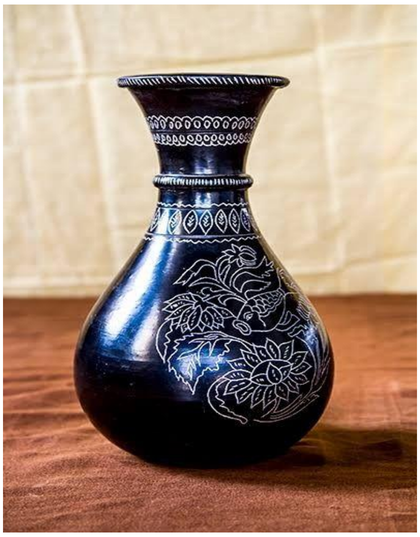

चित्र संख्या -1 फूलदान, चांदी के पैटर्न से उत्कीर्ण निज़ामाबाद की ब्लैक मृण कलाकृति
(Source: https://in.pinterest.com/pin/325103666854174578/)

चित्र संख्या-2 निज़ामाबाद की मृणमयी कला का ब्लैक मृण पात्र

चित्र संख्या-3 हाथी, औरंगाबाद की रेड मृणमयी कलाकृति
(Source: https://www.indiamart.com/khushboodesigner-studio/)

चित्र संख्या-4 घोड़ा, औरंगाबाद की मृणमयी कलाकृति
(Source: https://www.exportersindia.com/product-detail/terracotta-products-550013.htm)

मानचित्र

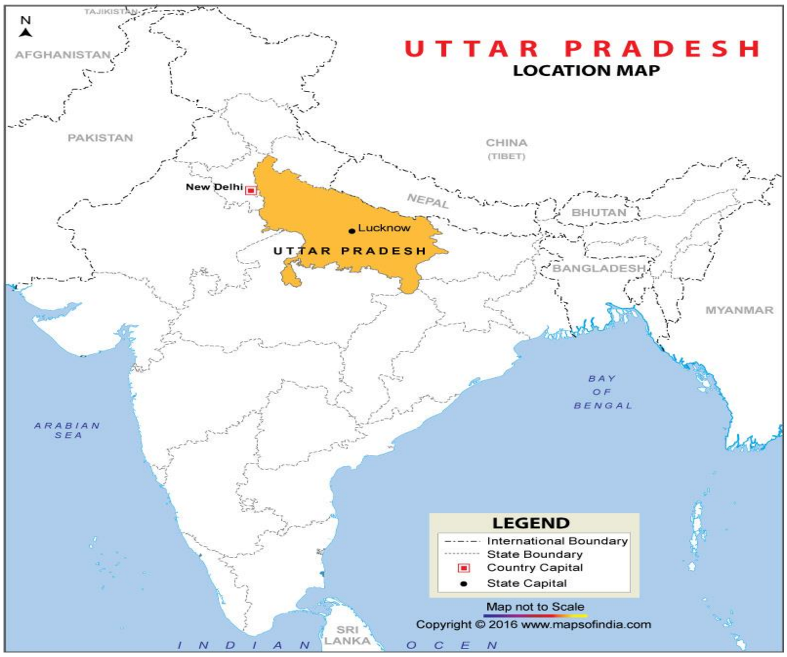

मानचित्र 1- भारत में उत्तर प्रदेश की स्थिति
(Source: https://www.mapsofindia.com/maps/uttarpradesh/uttarpradeshlocation.htm)

मानचित्र 2- उत्तर प्रदेश में गोरखपुर और आजमगढ़ की स्थिति
(Source: https://en.wikipedia.org/wiki/Administrative_divisions_of_Uttar_Pradesh)

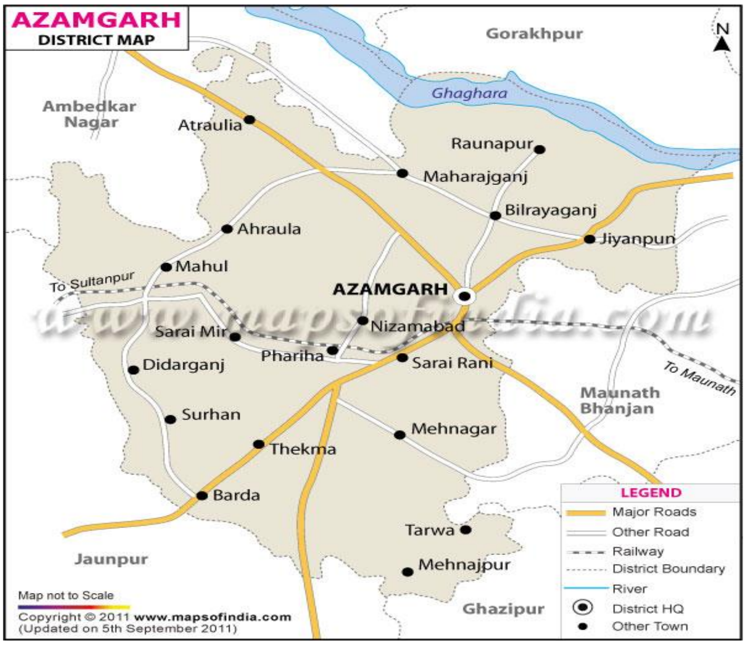

मानचित्र 3- आजमगढ़ में निज़ामाबाद की स्तिथि

(Source: https://www.mapsofindia.com/maps/uttarpradesh/districts/azamgarh.htm)

मानचित्र 4- गोरखपुर में औरंगाबाद की स्तिथि

(Source:http://www.brandbharat.com/english/up/districts/Gorakhpur/map%20of%20Gorakhpur.html)